खण्ड-6, अंक-1, वर्ष-2018, मु0पृ0 103-105, D.O.I. : 10.22445/avsp.v6i1.13907 वैज्ञानिक/ज्ञानवर्धक आलेख

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में भारत और महिला स्वास्थ्य

अंशु केडिया
एसोसिएट प्रोफेसर, समाज शास्त्र विभाग
ए0पी0 सेन मेमोरियल गर्ल्स पी0जी0 कॉलेज, लखनऊ–226001, उ0प्र0, भारत
akedia43@yahoo.in

प्राप्त तिथि–16.08.2018, स्वीकृत तिथि–13.10.2018

सार– विकास गुणात्मक परिवर्तन का द्योतक है। भारत विश्व की आज छठी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन चुका है। वैश्वीकरण की प्रक्रिया अपनाते हुये भारत की जी0डी0पी0 तो बढ़ रही है, पर मानव विकास सूचकांक में 131वें स्थान पर है। फलस्वरूप जनसामान्य आर्थिक सुधारों के लाभ से वंचित है। पुरुष प्रधान मानसिकता के कारण लैंगिक असमानता में भारत विश्व में 125वें स्थान पर है, जिसका सीधा प्रभाव महिलाओं की सामाजिक स्थिति, उनके स्वास्थ्य व शिक्षा में परिलक्षित हो रहा है।

बीज शब्द– वैश्वीकरण, आर्थिक सुधार, महिला स्वास्थ्य, लैंगिक असमानता।

India and women health: current perspective

Anshu Kedia
Associate Professor, Department of Sociology
A.P. Sen Memorial Girls Degree College, Lucknow-226001, U.P., India
akedia43@yahoo.in

Abstract- Development is indicator of splendid change. Today India has become sixth economic giant in the world. Although GDP of our country is increasing by adapting globalization patterns, still at 131st place with the result public in general is devoid of benefits of economic reforms. Owing to gender inequality in a male dominated mindset of Indian society our country is at 125th place eliciting direct effects on social, health and education status of female population.

Key words- Globalization, economic reforms, gender discrimination, women health.

1. परिचय– वृद्धि और विकास में अंतर है। वृद्धि मात्रात्मक होती है, इसकी आर्थिक आधार पर गणना की जाती है। मूल्य, नैतिकता, न्याय जैसे आधार वृद्धि के आंकलन से परे रहते हैं परन्तु विकास के घटक बन जाते हैं क्योंकि विकास गुणात्मक परिवर्तन का द्योतक है, जो मूल्य सापेक्ष होता है। आज भारत में मात्रात्मक वृद्धि में तीव्रता दिखायी दे रही है। विश्व बैंक की नयी रिपोर्ट के अनुसार भारत दुनिया की छठी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन चुका है।[1] इसकी वर्तमान आर्थिक दर 7.5 से ऊपर हो गयी है। वैश्वीकरण की प्रकिया को अपनाने के पश्चात भारत की आर्थिक सुधार की गति में तेजी दिखी गयी। वर्तमान जी0डी0पी0 की रिपोर्ट में फ्रांस जैसे सम्पन्न देश को पीछे छोड़ते हुए भारत छठे नम्बर पर आ गया है। जून 2017 के अन्त तक भारत की जी0डी0पी0 2.597 ट्रिलियन हो गयी, जबकि फ्रांस की 2.582 ट्रिलियन। परन्तु ध्यान देने वाला तथ्य यह है कि भारत की आबादी एक अरब सैंतीस करोड़ है और फ्रांस की मात्र 6 करोड़, अर्थात भारत की प्रति व्यक्ति जी0डी0पी0 फ्रांस की जी0डी0पी0 का मामूली हिस्सा भर है। फ्रांस की प्रतिव्यक्ति जी0डी0पी0 भारत की प्रति व्यक्ति जी0डी0पी0 से 20 गुना ज्यादा है, गौरतलब है कि इस आंकलन में जी0डी0पी0 को अरब पति और सबसे गरीब व्यक्ति दोनों की आय के आधार पर मापा जाता है।

एक ओर भारत में जी0डी0पी0 बढ़ रही है जो आर्थिक सुधारों के सकारात्मक परिणाम का द्योतक है और आर्थिक नीतिकारों को प्रसन्न होने का अवसर भी प्रदान कर रही है, परन्तु इसी परिप्रेक्ष्य में हमें अन्य रिपोर्ट्स का भी अध्ययन करना होगा। एक अन्तर्राष्ट्रीय चैरिटेबिल मंच ऑक्सफैम की रिपोर्ट[2] के अनुसार भारत में 1% सर्वाधिक अमीर व्यक्तियों का 73% सम्पत्ति पर अधिकार है और 67% भारतीयों की सम्पत्ति में सिर्फ 1% की वृद्धि हुयी है, अर्थात् आर्थिक आधार पर भारत की जी0डी0पी0 तो बढ़ रही है पर इस बढ़ती जी0डी0पी0 में आम व्यक्ति की हिस्सेदारी नगण्य है। आर्थिक सुधारों का लाभ मात्र गिने–चुने लोग ही उठा रहे हैं। आर्थिक संसाधनों पर वर्चस्वता के साथ उनकी सम्पत्ति में अभूतपूर्व वृद्धि हुयी है। प्रश्न यह है कि क्या बढ़ती जी0डी0पी0 कुछ अमीरों के लिए है और क्या यह जी0डी0पी0 देश में समानता व खुशहाली ला पा रही है?

एक रिपोर्ट संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा द वर्ल्ड हैपीनेस रिपोर्ट 2017 जारी की गयी।[3] इस रिपोर्ट के अनुसार सर्वाधिक खुशहाल देशों की सूची में भारत 122वें स्थान पर आ गया है जबकि पाकिस्तान, नेपाल, बांग्लादेश, भूटान, श्रीलंका जैसे पड़ोसी देश भी भारत से ऊपर हैं। वार्षिक विश्व खुशहाली रिपोर्ट में जिन कारकों से 155 देशों को मापा गया, उनमें असमानता, जीवन प्रत्याशा, प्रति व्यक्ति जी.डी.पी. लोक विश्वास(अर्थात् भ्रष्टाचार मुक्त भारत और व्यापार) और सामाजिक समर्थन जैसे कारक शामिल किये गये। वर्ष 2018 में जारी रिपोर्ट में तो भारत का स्तर और भी गिर गया है। वह 122 वें स्थान सें 133 वें पर पहुँच गया है। ध्यान देने योग्य है कि इसी वर्ष जी.डी.पी. में भारत से पीछे रहने वाला देश फ्रांस खुशहाल देशों की रिपोर्ट 2018 के अनुसार 23वें स्थान पर है। हाल ही में 21 मार्च को प्रकाशित हुयी यू0एन0डी0पी0 की मानव विकास रिपोर्ट[4] में भारत का स्थान पिछले वर्ष की तुलना में 1 स्थान नीचे खिसककर 188 देशों की सूची मे 131 वें स्थान पर आ गया है। इस सूची में .624 अंक प्राप्त करके भारत मध्यम मानव विकास की श्रेणी में कांगो, नामीबिया तथा पाकिस्तान जैसे देशों के साथ शामिल है। यह शोचनीय बिन्दु है कि जीडीपी में विश्व स्तर पर छठे नम्बर पर रहने वाला भारत देश एच0डी0आई0 में 131 वें नम्बर पर है।

2. **अध्ययन सामग्री**—यहाँ यह समझने की हमें आवश्यकता है कि एच.डी.आई.(अर्थात मानव विकास सूचकांक है क्या? मानव विकास सूचकांक यूएनडीपी की व्याख्या के अनुसार वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा जन सामान्य के लिए विकल्पों का विस्तार किया जाता है और कल्याण के उन्नत स्तर को प्राप्त किये जाने का प्रयास किया जाता है। सर्वप्रथम पाकिस्तानी अर्थशास्त्री महबूब उल हक और बाद में अर्थशास्त्री अमर्त्य सेन(1995) द्वारा एचडीआई की गणना हेतु 3 महत्वपूर्ण सामाजिक घटकों को आधार बनाया गया। ये घटक हैं—

1. **जीवन प्रत्याशा—** जीवन प्रत्याशा जो कि स्वतंत्रता के समय 32 वर्ष थी, अब बढ़कर 68.3 वर्ष हो गयी है।
2. **ज्ञान की उपलब्धता**— सभी को प्राथमिक से लेकर उच्च स्तर तक ज्ञान प्राप्ति की सुलभता हो। वर्तमान में भारत में शिक्षा का मात्रात्मक आधार पर जाल फैल चुका है, परन्तु गुणवत्ता का स्तर प्रश्न खड़ा करता है।
3. **प्रति व्यक्ति आय जो जीवन निर्वाह का स्तर प्रदर्शित करती हो—** वर्ष 1947 में 249.6 थी, जो 8.6 प्रतिशत की दर से बढ़कर 112,815 हो गयी, अर्थात् 200 गुना की वृद्धि हुयी है।

लैंगिक असमानता सूचकांक[5] एक नया सूचकांक है जिसका प्रारम्भ लैंगिक असमानता की माप के लिए वर्ष 2010 में मानव विकास रिपोर्ट की 20वीं वर्षगांठ संस्करण के अवसर पर संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम(UNDP) द्वारा की गयी थी। इस की गणना के लिए 3 आयामों का उपयोग किया जाता है—

1. प्रजनन स्वास्थ्य, 2. अधिकारिता, 3. श्रम बाजार भागीदारी

जी0आई0आई0 रिपोर्ट के अन्तर्गत भारत की 159 देशों की रैंकिग में 125 वां स्थान है। आज भारत में 1 लाख जन्म पर 174 मातृत्व मृत्यु दर है। संसद में केवल 12.2 प्रतिशत महिलाएं है। 15 वर्ष से ऊपर की मात्र 26.8 प्रतिशत महिलाएं श्रम बाजार में है। पिछली कमियों को दूर करने के लिए एक नये सूचकांक को प्रयोगात्मक रूप में पेश किया गया है ये सूचकांक है— लिंग विकास सूचकांक(जी0डी0आई0) और लिंग सशक्तीकरण आय(जी0ई0एम0)। दोनों का आरम्भ वर्ष 1995 की मानव विकास रिपोर्ट में की गयी है।

3. **महिला स्वास्थ्य की स्थिति—** जब भारत स्वयं सामाजिक मानवाधिकार पर पिछड़े देशों की श्रेणी में है, तो यहाँ की महिलाओं की स्थिति दयनीय होना स्वाभाविक है क्योंकि पितृसत्तात्मक ढांचा पहले से उपलब्ध संसाधनों में पुरूष का अधिकार देखता है बाद में उपलब्ध का महिला को इस ढांचे में प्रतिनिधित्व प्राप्त होता है। निम्न मामलों में पुरूषों से महिलाएं अलग होती हैं—

1. पुरूषों की तुलना में महिलाएं गरीबी से अधिक प्रभावित होती है साथ ही उनको शिक्षा तथा अपने पैरों पर खड़े हो सकने की दक्षता से अधिक रोका जाता है।
2. महिलाएं पुरूषों की तुलना में मानसिक व भावात्मक रूप में अधिक पीड़ित होती हैं।
3. महिलाओं को पुरूषों की तुलना में शिक्षा व जागरूकता की कमी के कारण स्वास्थ्य सम्बन्धी जानकारी कम होती है।
4. पुरूषों की अपेक्षा, ऐसी महिलाओं की संख्या अत्यधिक है जिनका अपने स्वयं के स्वास्थ्य सम्बन्धित मूलभूत व जीवन के अन्य निर्णय लेने पर कोई नियंत्रण नहीं है।
5. पुरूषों की तुलना में, महिलाएं घरेलू स्तर पर अनुत्पादक कार्यों में ज्यादा श्रम करती है परन्तु आर्थिक रूप से आंकने के अभाव में इनका योगदान कम महत्वपूर्ण माना जाता है।[6]

महिलाओं के प्रति भेदभावपूर्ण दृष्टिकोण के कारण उनका स्वास्थ्य विषय भी पीछे रह जाता है। दिन भर घर के काम करने वाली, सबको खाना बनाकर खिलाने वाली महिला सामान्यतया सबसे अंत में खाना खाती है अगर कुछ कम हो तो उतने से ही काम चला लेती है या कभी—कभी बचे खाने को फेंकने के डर से आवश्यकता से अधिक खा लेती हैं। दोनों ही स्थितियां चाहें वह कुपोषण में बदले या अधिक स्थूलता में, दोनो ही स्थितियां स्वास्थ्य के दृष्टिकोण से घातक है। सामान्यतः महिला स्वास्थ्य को नजरअंदाज करने के कारण भारत में मृत्युदर नेपाल, श्रीलंका जैसे कम विकसित देशों से

भी अधिक है। गर्भावस्था में, प्रसव के समय अथवा उसके कुछ दिन पश्चात् दम तोड़ती नारी एक मानवीय त्रासदी है। यह वह समय होता है जब महिलाओं को आवश्यकता के अनुसार पोषण नहीं मिल पाता है परिणामस्वरूप महिला के शरीर में पोषक तत्वों की कमी बढ़ती है। आंकड़ों के अनुसार हमारे देश में करीब 70 प्रतिशत सामान्य महिलाओं व 75 प्रतिशत गर्भवती महिलाओं में रक्ताल्पता देखी गयी है। भारतीय चिकित्सा अनुसंधान परिषद (आईसीएमआर) की एक रिपोर्ट के अनुसार आज भी 48 प्रतिशत महिलाएं कुपोषित हैं। कमजोर मनोसामाजिक स्थिति और अपेक्षाकृत अल्प स्वास्थ्य सुविधा भी इसका मुख्य कारण है। महिलाओं के साथ खानपान का भेदभाव ही कुपोषण का मूल एवं चिंतनीय कारण है उल्लेखनीय है कि कुपोषण कोई संक्रामक रोग नहीं है लेकिन इसके शिकार मां के कुपोषण के कारण जन्में शिथिल बच्चे, जीवन भर के लिये शारीरिक और मानसिक रूप से कमजोर हो जाते है।

4. **विश्लेषण–** 2015–17 के मध्य भारत में तीन लाख पुरूषों और महिलाओं पर किये गये एक सर्वेक्षण के अनुसार लगभग 80 प्रतिशत लोगों में विटामिन डी की कमी पायी गयी है। महिलाओं में पुरूषों की तुलना में इसकी कमी का प्रतिशत अधिक है।[7] इसी सर्वेक्षण के अनुसार पुरूषों की तुलना में महिलाओं में कुल कोलस्ट्रॉल का स्तर अधिक पाया गया। लगभग 30 फीसदी महिलाओं में पुरूषों(16 प्रतिशत) की तुलना में एनीमिया के मामले अधिक थे। 61 वर्ष से अधिक आयु की महिलाओं में एनीमिया से पीड़ित होने की अधिक सम्भावना थी।

घरों में ही अप्रशिक्षित हाथों से प्रसव से मृत्यु की समस्या को देखते हुए संस्थागत प्रसव को प्रोत्साहन देने के लिए सरकार द्वारा अप्रैल 2005 में (जेएसवाई) जननी सुरक्षा योजना शुरू की। जेएसवाई के लाभार्थियों की संख्या में वर्ष 2005–06 में 7.39 लाख से बढ़कर वर्ष 2014–15 में 104.38 लाख की वृद्धि हुयी। इस योजना के बाद भी अभी तक केवल 31 प्रतिशत महिलाएं ही अस्पताल में प्रसव के लिए आ रही हैं। इस योजना के अन्तर्गत अस्पताल में उसे डिलीवरी की सुविधा प्रदान की जाती है और प्रति दिन के अनुसार पोषण के लिए 100 रूपये भी खर्च के लिए भी दिये जाते है। दवाईयां भी निःशुल्क दी जाती हैं। महिलाओं को प्रोत्साहन राशि के रूप में रू0 6000/– नगद भी दिया जाता है।[8] आई0सी0डी0एस0 योजना के अन्तर्गत भी महिलाओं के कुपोषण व प्रसव पर ध्यान दिया जाता है। वर्तमान में आर्थिक सुधारों की नीति सरकार को शिक्षा व स्वास्थ्य में बजट आवंटन को रोक रही हैं एक अन्य कारण स्वास्थ्य के क्षेत्र में पर्याप्त पारदर्शिता का अभाव भी है। इसीलिये स्वास्थ्य के क्षेत्र में अपेक्षित परिणाम नहीं मिल रहा है।

वर्तमान समय में महिलाओं के स्वास्थ्य में सुधार के लिए इनकी जीवन परिस्थितियों में परिवर्तन लाना जरूरी है ताकि उन्हें अपने स्वास्थ्य व जीवन पर अधिक नियंत्रण व शक्ति मिल सके। जब कभी ऐसा होता है तो महिला, उसके परिवार तथा समुदाय सभी को लाभ होता है एक स्वस्थ व प्रसन्न महिला को अपने अंदर निहित सामर्थ्य को सम्पूर्ण रूप से पूरा करने की अधिक सम्भावना होती है। इसके अतिरिक्त उसके बच्चे भी स्वस्थ होंगे, परिवार के खुशहाल वातावरण से वह समाज के प्रति भी सकारात्मक योगदान दे सकेगी। अतः महिला स्वास्थ्य की समस्या मात्र एक महिला की ही समस्या नहीं वरन् यह एक सामाजिक व सामुदायिक समस्या है।[9,10]

5. **निष्कर्ष**– आंकड़ों के अनुसार साक्षरता में प्रथम केरल जैसे छोटे राज्य में पंजाब जैसे सम्पन्न राज्य की तुलना में टीकाकरण का प्रतिशत कहीं अधिक है। अन्य राज्यों में भी देखा गया है कि जिस राज्य में महिला शिक्षा प्रतिशत अधिक है, वहीं मातृ तथा शिशु स्वास्थ्य की स्थिति संतोषजनक है। केन्द्र एवं राज्य सरकार की मातृ एवं शिशु कल्याण की अनेकों योजनाएं चलाई जा रही हैं, परन्तु कहीं–कहीं विस्तृत जानकारी के अभाव में महिलायें इनका पूरा लाभ नहीं उठा पा रही हैं।

संदर्भ

1. इकोनॉमी ऑफ इण्डिया–विकीपीडिया, https://en.m.wikipedia.org
2. इण्डिया इनईक्वैलिटी रिपोर्ट–2018 वाइडेनिंग रिपोर्ट, ऑक्सफेम इण्डिया।
3. द वर्ल्ड हैपीनेस रिपोर्ट–2017, मार्च 2017।
4. जेंडर इनईक्वैलिटी इन्डेक्स(जीआईआई)
5. ह्यूमन डेवेलपमेंट रिपोर्ट–यूएनडीपी।
6. "महिला स्वास्थ्य"–विकासपीडिया।
7. www.india.com "माडर्न लाईफस्टाइल आराम के साथ महिलाओं को बना रहा है बीमार", अप्रैल, 2018।
8. जननी सुरक्षा योजना–2018, www.upcmrelpeie1076
9. "महिला स्वास्थ्य का अर्थ", महिला स्वास्थ्य–विकासपीडिया, Vikaspedia.in.health
10. देवांगन, नरेन्द्र, "महिला स्वास्थ्य के लिए गम्भीरता से प्रयास हो", रॉयल बुलेटिन www.rayalbulletin.com